प्राकृतिक गैस कितनी साफ?

कोयले और पेट्रोलियम के समान प्राकृतिक गैस भी एक जीवाश्म ईंधन है। आजकल ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की चिंता के चलते कोयले की बजाय प्राकृतिक गैस से बिजली उत्पादन की वकालत की जा रही है। मगर ताज़ा आंकड़े बताते हैं कि प्राकृतिक गैस से बिजली बनाना भी उतना साफ सुथरा नहीं है जितना कि दावा किया जाता रहा है। मसलन, ब्रिटेन ने दावा किया था कि बिजली उत्पादन के लिए कोयले को छोड़कर प्राकृतिक गैस का उपयोग करके उसने ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी की है।

आजकल कई देश प्राकृतिक गैस उत्पादन के लिए चट्टानी संरचनाओं (शेल) को फोड़ने की विधि अपना रहे हैं। इसके लिए ऊंचे दबाव पर तरल पदार्थ चट्टान में इंजेक्ट किए जाते हैं। इस प्रक्रिया को फ्रेकिंग कहते हैं। पिछले वर्ष कॉर्नेल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया था कि यदि प्राकृतिक गैस से बिजली उत्पादन की प्रक्रिया में फ्रेकिंग को भी जोड़ा जाए, तो इसमें जितनी मीथेन निकलती है वह कोयले के मुकाबले ज़्यादा ही होगी।

दूसरी ओर, प्राकृतिक गैस उद्योग का दावा है कि कॉर्नेल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने समस्या को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है।

यूएस के राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान व वायुमंडल प्रशासन ने डेनवर के नज़दीक प्राकृतिक गैस क्षेत्र में वायुमंडल में मीथेन की मात्रा का अध्ययन करने पर पाया था कि प्राकृतिक गैस निष्कर्षण में काफी अधिक मीथेन वायुमंडल में पहुंचती है। यह मात्रा पहले सोची गई मात्रा से दुगनी पाई गई और धरती को गर्म करने में अपनी भूमिका निभाएगी। वैसे कहा जा रहा है कि इन आंकड़ों में काफी अनिश्चितता है। अब ज़रूरत इस बात की है कि इस अनिश्चितता को कम से कम किया जाए ताकि कुछ पक्के नतीजे हासिल किए जा सकें।

अलबत्ता, इस बात में कोई संदेह नहीं कि ये आंकड़े एक चेतावनी स्वरूप हैं। इनसे एक ज़रूरत और सामने आती है। पर्यावरण वगैरह के मामले में हम सिर्फ उद्योगों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों पर भरोसा नहीं कर सकते। किसी न किसी प्रकार के स्वतंत्र आकलन करने व निगरानी की भी ज़रूरत है।

फिलहाल कहा जा रहा है कि स्वच्छ ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाते हुए प्राकृतिक गैस एक सेतु की तरह काम करेगी। मगर अध्ययन बता रहे हैं कि यह सेतु बहुत स्वच्छ नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***

शैक्षणिक संदर्भ

विज्ञान और शिक्षा से सम्बन्धित विविध मुद्दों और विषयों पर परत दर परत खुली चर्चा करती एक बेबाक पत्रिका

• विज्ञान • विज्ञान शिक्षण • बच्चों और शिक्षकों के साथ अनुभव • कहानी
• शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षण विधि • पुस्तक अंश / पुस्तक समीक्षा • भाषा शिक्षण

वार्षिक सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत - 150 रुपए
संस्थागत - 300 रुपए
एक अंक की कीमत - 30 रुपए, कुल पृष्ठ- 92

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर या मल्टीसिटी चेक से भेजें।